|| देवी दिग्बन्धन स्तोत्र ||

प्राच्यां रक्षतु माम् ऐन्द्री आग्नेयाम् अग्निदेवता ॥ १७ ॥

दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी ।

प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी ॥ १८ ॥

उदीच्यां रक्ष कौबेरि ईशान्यां शूलधारिणी ।

ऊर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षेद् अधस्ताद् वैष्णवी तथा ॥ १९ ॥

एवं दश दिशो रक्षेद् चामुण्डा शववाहना ।

- इस स्तोत्र का 10 हजार पाठ करने से यह स्तोत्र पूर्ण रूप से जाग्रत एवं सिध्द हो जाता है ! नवरात्रि में केवल एक हजार पाठ से ही यह सिद्ध होगा ! स्तोत्र में जिस दिशाओं का नाम दिया है , उसी दिशा में पीली सरसों अथवा जल फेंकते हुए स्तोत्र पाठ करें ! आकस्मिक संकट में इस स्तोत्र का 5 बार पाठ करने से रक्षा हो जाती है और नकारात्मकता दूर होती है ! यह स्तोत्र महिलाओं के लिए एक वरदान जैसा है !
- अधिक जानकारी के लिए वेबसाईट देखें .. https://swamirupeshwaranand.in/